इकाई 14 जॉर्ज विल्हेम फ्रेडरिक हेगेल

इकाई की रूपरेखा

14.1 प्रस्तावना

14.2 जीवन और काल

14.3 आध्यात्मिक पूर्वज परंपरा

14.3.1 ऐतिहासिक घटनाओं का प्रभाव

14.4 हेगेल का आदर्शवाद

14.4.1 द्वंद्वात्मक पद्धति

14.4.2 द्वंद्वात्मक पद्धति का प्रयोग

14.5 इतिहास का दर्शन

14.6 राज्य का सिद्धांत

14.7 व्यक्ति की स्वतंत्रता का सिद्धांत

14.8 उपसंहार

14.9 सारांश

14.10 अभ्यास

14.1 प्रस्तावना

हेगेल जर्मनी के आदर्शवाद की देन था जिसने रूसो और कांट से पर्याप्त प्रेरणा ग्रहण की और इसे जर्मनी के एकीकरण की समकालीन लोकप्रिय इच्छा के साथ जोड़ा। परिणामस्वरूप यूरोप में राष्ट्र-राज्यों का उदय हुआ। फिश्ते (Fichte) के समान हेगेल ने भी आदर्शवाद की भावनाओं को प्रतिध्वनित किया।

उसका यह दावा था कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति की वास्तविक इच्छा नकारात्मक न होकर सकारात्मक होती है। इसका अभिप्राय यह है कि व्यक्ति की विवेकपूर्ण इच्छा की अभिव्यक्ति राज्य की इच्छा की समग्रता में होती है। व्यक्ति का इच्छा राज्य की चेतना और नैतिक सत्ता के अधीन होती है। व्यक्ति के द्वंद्वात्मक तर्क द्वारा इतिहास की यात्रा अपूर्ण अवस्था से पूर्ण अवस्था की ओर अग्रसर होती है और वह "है" और "चाहिए" के बीच के अंतर से संबंधित सभी बाधाओं को तार्किक दृष्टि से दूर कर देती है। इससे यथार्थ, तर्कसम्मत बन जाता है। जहाँ राज्य इस आदर्श की सबसे महत्वपूर्ण संस्था है, वहीं इसके दो अन्य महत्वपूर्ण घटक हैं - सभ्य समाज और परिवार। हेगेल के वर्तमान सिद्धांत में स्वतंत्रता की महत्वपूर्ण भूमिका थी, लेकिन स्वतंत्रता की हेगेलीय व्याख्या ब्रिटिश उदारवादी प्रभाव के विपरीत तर्कपरकता से संबंधित थी, जिसने स्वतंत्रता को मुक्ति और वैयक्तिकता से जोड़ दिया।

14.2 जीवन और काल

हेगेल का जन्म 1770 ई. में दक्षिणी जर्मनी के वर्टेमबर्ग राज्य में हुआ था। हेगेल के पिता उसे पादरी बनाना चाहते थे इसलिए उसने धर्मशास्त्र का अध्ययन किया। सन् 1793 में उसने ट्यूबिंगन विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। उसके बाद वह बर्न और फ्रेंकफर्ट में शिक्षक हो गया और लगभग सात वर्ष तक वहाँ कार्य किया। सन् 1801 में वह जेना विश्वविद्यालय में प्राध्यापक पद पर नियुक्त हो गया और बाद में वह प्रोफेसर हो गया। सन् 1816 में हीडलबर्ग विश्वविद्यालय में उसकी नियुक्ति दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर के पद पर हो गई और 1818 में वह बर्लिन विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर के पद पर नियुक्त हो गया। इससे पूर्व इस पद पर प्रख्यात जर्मन दार्शनिक फिश्ते कार्यरत थे। अपने इस कार्य के साथ हेगेल ने प्रशिया (जर्मनी) के सम्राट के सरकारी सलाहकार के रूप में भी कार्य किया। मृत्यु पर्यंत उसने इन दो पदों पर कार्य किया।

हेगेल ने राजनीतिक दर्शन के विभिन्न पक्षों पर विस्तारपूर्वक लिखा। जब वह जेना विश्वविद्यालय में था तब उसने मन की घटना क्रिया विज्ञान विषयक अपनी पहली प्रमुख रचना "फिनोमेनोलॉजी ऑफ माइंड" (Phenomenology of Mind) लिखी, जिसका प्रकाशन 1807 में हुआ। इसके बाद सन 1811-12 में उसकी दूसरी रचना ''साइंस ऑफ लॉजिक'' (Science of Logic) प्रकाशित हुई। इस रचना के प्रकाशन के बाद हेगेल को जर्मनी के विशिष्ट दार्शनिक के रूप में मान्यता प्राप्त हो गई। हीडलबर्ग में कार्य के दौरान लिखी तीसरी रचना ''एनसाइक्लोपीडिया ऑफ दी फिलोसफिकल साइंसेज़'' (Encyclopedia of the Philosophical Sciences) के प्रकाशन ने हेगेल को पूरे यूरोप में प्रसिद्ध कर दिया। जब वह बर्लिन में था तब उसने अपनी प्रमुख रचना "फिलोसफी ऑफ राइट" (Philosophy of Right) लिखी जिसका संबंध राजनीतिक सिद्धांत से था। उसने बहुत से विद्वतापूर्ण भाषण भी दिए जिनका प्रकाशन हेगेल की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र ने "फिलोसॉफी ऑफ हिस्ट्री" (Philosophy of History) नाम से किया। उसकी रचनाओं, भाषणों, और सम्राट के सलाहकार आदि पदों पर कार्य से उसे अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रसिद्धि मिली और बहुत-से लोग उसके अनुयायी बन गए। वह न केवल दार्शनिकों का राजा बन गया बल्कि राजाओं का दार्शनिक भी बन गया।

14.3 आध्यात्मिक पूर्वज परंपरा

हेगेल की रचनाओं से यह ज्ञात होता है कि उसे अतीत के कई दार्शनिकों और विचारकों ने अत्यधिक प्रभावित किया। हेगेल ने अपनी द्वंद्वात्मक पद्धति को सुकरात से ग्रहण किया। इस प्रकार हेगेल के द्वंद्वात्मक आदर्शवाद के सिद्धांत की पूर्वजता को अतीत के दो महान् यूनानी विचारकों में देखा जा सकता है। हेगेल पर अरस्तू के सोद्देश्यवाद (Teleology) का प्रभाव भी दिखाई देता है। सोद्देश्यवाद ज्ञान का ऐसा सिद्धांत है जिसके अनुसार किसी चीज़ को उसके उद्देश्य या प्रयोजन की दृष्टि से समझा जाता है। उदाहरण के तौर पर, किसी घड़ी का प्रयोजन या उद्देश्य समय बताना है। इस प्रकार समय बताना घड़ी की सही प्रकृति या सही प्रयोजन या उद्देश्य है। हेगेल की रचनाओं पर महान् जर्मन बुद्धिवादी इमेनुअल कांट का प्रभाव भी देखा जा सकता है। हेगेल के विचार में राज्य की स्थापना तर्क के आधार पर होती है और राज्य द्वारा बनाए गए कानून विशुद्ध तर्क के आदर्श होते हैं जो कांट की स्थिति के एकदम समान है। कांट की तरह हीगल व्यक्तियों को राज्य या इसके द्वारा बनाए गए कानूनों का प्रतिरोध या विरोध करने का अधिकार नहीं देता। हेगेल पर रूसो के प्रभाव के भी कुछ संकेत मिलते

हैं। रूसो की सामान्य इच्छा की तरह हेगेल के विचार, भावना या तर्क अचूक हैं। और रूसो की तरह हेगेल निजी हितों के बजाय सार्वजनिक हितों को प्रमुखता देता है। संभवतः आपने पढ़ा होगा कि रूसो ने वास्तविक इच्छा (actual will) और यथार्थ इच्छा (real will) के बीच अंतर किया है। यदि हम इसे हेगेल के शब्दों में कहें, तो रूसो की वास्तविक इच्छा उसे कहेंगे जो व्यक्ति के अपने हितों को बढ़ावा दे जबकि यथार्थ इच्छा उसे कहेंगे जो सार्वजनिक हितों को प्रोत्साहित करे, क्योंकि सामान्य इच्छा सभी तर्क पर आधारित वास्तविक इच्छाओं का कुल योग है या समग्र रूप है और यह अपरिहार्य है।

हेगेल के दर्शन का स्वरूप ऐतिहासिक है। इतिहासपरतावाद (historicism) एक सिद्धांत है जिसे विभिन्न विचारकों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से समझा है। अपने सर्वसामान्य रूप में यह इस अवधारणा पर आधारित है कि मानव क्रियाकलापों और उपलब्धियों के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान की एक सीमा है और इस प्रकार के अपर्याप्त वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग भावी घटनाओं के मार्ग को नियंत्रित करने के साधन के रूप में नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत, इतिहासपरतावाद का संबंध सभी मानवीय घटनाओं के तार्किक नियंत्रण की महत्वाकांक्षा से जुड़ा है।

14.3.1 ऐतिहासिक घटनाओं का प्रभाव

पिछले भाग में उन लोगों का उल्लेख किया जा चुका है जिनका हेगेल पर प्रमुख प्रभाव पड़ा। लेकिन हेगेल पर केवल अतीत के महान विचारकों का ही प्रभाव नही पड़ा था। कुछ समकालीन महत्वपूर्ण घटनाओं ने भी उसे प्रभावित किया था। हेगेल पर जिन दो घटनाओं का पर्याप्त प्रभाव पड़ा वे थीं - 1789 की फ्रांसीसी क्रांति; और उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में नेपोलियन द्वारा जर्मनी का पराभव। फ्रांसीसी क्रांति ने पुरानी दमनकारी सामंतवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंका और स्वतंत्रता, समानता तथा भाईचारे के नैतिक मूल्यों से जुड़े नए समाज की व्यवस्था को स्थापित किया। उसकी रचनाओं को विशेष रूप से स्वतंत्रता और भाईचारे के मूल्यों ने प्रभावित किया। नेपोलियन द्वारा जर्मन राज्य के अधीनीकरण ने उसका मोहभंग कर दिया और उसने जर्मनी की स्थायी राजनीतिक समस्याओं के समाधान करने का निश्चय किया। अपनी रचनाओं में उसने जिस प्रकार के समाधान की वकालत की वह अनुपम और कई दृष्टियों से परस्पर विरोधी था।

इससे पहले कि हम हेगेल के राजनीतिक दर्शन का विश्लेषण आरंभ करें, हमारे लिए इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है कि यद्यपि उसने बहुत-सी बातें प्लेटो, सुकरात, अरस्तू, कांट और रूसो से ग्रहण कीं लेकिन उसने उनका उपयोग अपने नए दर्शन को विकसित करने के लिए किया। हेगेल ने उनके विचारों को अपनी तार्किक पद्धति में आत्मसात कर लिया। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि हेगेल के राजनीतिक दर्शन का उनसे पृथक अस्तित्व है।

14.4 हेगेल का आदर्शवाद

राजनीतिक विचारों के इतिहास में वास्वतिकता की प्रकृति के संबंध में दो प्रमुख मत हैं। ये हैं.- "आदर्शवाद और प्रकृतिवाद" (Idealism and naturally) तथा "बुद्धिवाद और अनुभववाद" (rationalism and empiricism)। वास्तविकता की प्रकृति के बारे में प्रश्न सत्तामूलक है जबकि आदर्शवादी संप्रदाय के अनुसार इसके बारे में जानने का प्रश्न ज्ञानशास्त्र से संबंधित (epistemological) है। हेगेल इस आदर्शवादी संप्रदाय का प्रमुख प्रतिपादक है (इसका दूसरा प्रतिपादक प्लेटो था)। विश्व में प्रत्येक वस्तु

चाहे वह भौतिक हो या अभौतिक - का सही ज्ञान उस वस्तु के संबंध में विचार से होता है। दूसरे शब्दों में, वस्तु के संबंध में विचार स्वयं उस वस्तु की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। इसलिए जो बात वास्तविक और स्थायी है वह "वस्तु के बारे में विचार है", न कि वस्तु। ऐसा इसलिए है क्योंकि भौतिक जगत निरंतर परिवर्तनशील है, परंतु विचार स्थायी है। भौतिक जगत विचार की ही अभिव्यक्ति है। उदाहरणार्थ, कुर्सी या मेज़ का सही ज्ञान कुर्सी या मेज़ के विचार को समझने में है। वास्तव में जिस मेज़ का हमारे सामने अस्तित्व है वह तभी मेज़ है जब उसमें मेज़पने की विशेषताएँ हों। एक बढ़ई तभी मेज़ बना सकता है जब उसके मन में मेज़ का विस्तार हो और जिस मेज़ का वह निर्माण करता वह उसके मेज़ के विचार के सदृश वस्तु की अभिव्यक्ति होती है। गरम और ठंडा शब्दों को हम विचार के रूप में समझते हैं। वास्तव में विद्यमान वस्तुओं का ज्ञान आपेक्षिक होता है इसलिए अधूरा होता है। जब आप कहते हैं कि इस गिलास का पानी गरम है तो यह केवल एक आपेक्षिक सत्य है क्योंकि उबलते हुए पानी की तुलना में वह ठंडा होता है, लेकिन यदि हम उसकी तुलना फ्रिज़ के पानी से करें तो वह गरम है। इसलिए वास्तविक ज्ञान, गरम और ठंडे के विचार, को समझना है।

हेगेल के आदर्शवाद को प्रायः निरपेक्ष आदर्शवाद (Absolute Idealism) कहा जाता है क्योंकि यह हमारे सामने कुछ ऐसे वर्ग (गरम और ठंडा, सुख और दुख) रखता है जिनकी दृष्टि से अतीत और वर्तमान के सभी मानवीय अनुभवों को समझा जा सकता है। हेगेलीय आदर्शवाद का एक और आयाम भी है। इसे इतिहास की आदर्शवादी व्याख्या कहा जा सकता है। इस सिद्धांत के अनुसार विचार ही इतिहास के वास्तविक प्रेरक तत्व हैं। इतिहास को जो बात गति प्रदान करती है वह विचारों का विकास है। समाज, अर्थव्यवस्था, राज्य-तंत्र और संस्कृति में सभी परिवर्तन विचारों के विकास से होते हैं। हेगेल का आदर्शवाद (जिसे प्रायः निरपेक्ष आदर्शवाद कहा जाता है) में व्यक्ति और वस्तु के बीच एक विशेष प्रकार का संबंध देखा जाता है। यह व्यक्ति और वस्तु के बीच का संबंध है। यह जानने वाले व्यक्ति और जिसे जाना जाता है उस वस्तु जगत के बीच का संबंध है अर्थात् यह मन और विश्व के बीच का संबंध है।

14.4.1 द्वंद्वात्मक पद्धति (Dialectical Method)

हेगेल के राजनीतिक दर्शन का मुख्य आधार द्वंद्वात्मक पद्धति है। जैसा कि पहले संकेत किया जा चुका है कि हेगेल ने इस पद्धति को सुकरात से ग्रहण किया। सुकरात इस पद्धति का पहला प्रतिपादक था। "डायालेक्टिक" का मतलब है विचार-विमर्श करना। सुकरात की मान्यता थी कि किसी सत्य पर पहुँचने के लिए उस विषय में बार-बार प्रश्न करने की आवश्यकता होती है। यह पारस्परिक विचार-विमर्श की पद्धति से विरोधों को प्रदर्शित करने की प्रक्रिया है। इस विषय में सुकरात से संकेत लेकर हेगेल ने कहा कि आत्मज्ञान की खोज में वह निरपेक्ष विचार भाव से अभाव की ओर तथा अभाव से असंभाव्य (non-becoming) की ओर बढ़ता है। इसे यदि सरल शब्दों में कहा जाए तो कोई विचार पक्ष (thesis) से प्रतिपक्ष (antithesis) की ओर तब तक अग्रसर होता है जब तक कि दोनों में संश्लेषण न हो जाए।

ले लेता है और उससे अपने प्रतिपक्ष को पैदा करता है। यह प्रक्रिया चालू रहती है। व्यवहार में, हेगेल ने अपनी द्वंद्वात्मक पद्धति को विचार के क्षेत्र पर लागू किया। इसलिए उसकी इस पद्धति को द्वंद्वात्मक आदर्शवाद कहा जा सकता है। इसका अभिप्राय यह है कि प्रत्येक विचार का पक्ष और प्रतिपक्ष होता है और मूल विचार तथा विरोधी विचार मिलकर नया विचार देते हैं जिसे संश्लेषण (synthesis) कह सकते हैं। यह नया विचार समय के साथ स्वयं एक पक्ष बन जाता है और इससे इसके प्रतिपक्ष का

उदय होता है और यह प्रक्रिया जारी रहती है। हेगेल ने कहा कि उसकी द्वंद्वात्मक पद्धति के उपयोग से उसने दर्शन के इतिहास में सबसे महान फार्मूला खोज निकाला। उसने दावा किया कि इतिहास में तर्क की प्रगति की जटिल द्वंद्वात्मक प्रक्रिया है। यह ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा विचार स्वयं को आगे बढ़ाता है। द्वंद्वात्मक आदर्शवाद इतिहास को अपने सही परिप्रेक्ष्य में व्याख्यायित करने का साधन है।

14.4.2 द्वंद्वात्मक पद्धति का प्रयोग

अपनी द्वंद्वात्मक पद्धति का विवरण देने के बाद हेगेल ने बताया कि किसी घटना या तथ्य को द्वंद्ववाद के नियमों के अनुसार सबसे अच्छी तरह समझा जा सकता है, यानी जब इसे इसके विरोधी के विरोध में प्रयोग किया जाए। जैसे सुख को दुख के विरोध में अच्छी तरह समझा जा सकता है। इसी प्रकार गर्मी को सर्दी के विरोध में, अच्छाई को बुराई के विरोध में, न्याय को अन्याय के विरोध में समझा जा सकता है। हेगेल ने पक्ष, प्रतिपक्ष और इनके संश्लेषण के कई उदाहरण दिए हैं। इस विषय में उसके द्वारा दिए गए निम्नलिखित उदाहरण उल्लेखनीय हैं। आपको इन्हें याद रखना चाहिए :

i) परिवार पक्ष है, सार्वनजिक समाज प्रतिपक्ष है और राज्य संश्लेषण है।

ii) तानाशाही पक्ष है, लोकतंत्र प्रतिपक्ष है और संवैधानिक राजतंत्र संश्लेषण है।

iii) अकार्बनिक या अजैव विश्व पक्ष है, कार्बनिक या जैव विश्व प्रतिपक्ष है और मानव-जाति संश्लेषण है।

हेगेल का विश्वास था कि वस्तु की वास्तविक प्रकृति को तभी जाना जा सकता है यदि उसके विरोधी स्वरूप को भी जान लिया जाए। इस दृष्टि से उसका द्वंद्ववाद का सिद्धांत विरोध या निषेध पर आधारित है। उसने विकास की संपूर्ण प्रक्रिया के पीछे विरोधों को प्रेरक बल माना है। यह ब्रह्मांड और विचार का आधारभूत नियम है।

14.5 इतिहास का दर्शन

हेगेल के इतिहास के दर्शन की सामग्री बर्लिन विश्वविद्यालय में सेवाकाल के दौरान दिए गए भाषणों में निहित है। वह भौतिक वस्तुओं को विशेष महत्व नहीं देता। वह उन्हें केवल निरपेक्ष विचार के विकास के संचित परिणाम के रूप में देखता है। निरपेक्ष विचार गत्यात्मक है और निरंतर विकासशील है। वह आत्मज्ञान की खोज में आगे की ओर बढ़ता है। हेगेल ने इसे ''तर्क का प्रकटीकरण'' (unfolding of reason) कहा है। यह संपूर्ण विश्व तर्क के प्रकटीकरण की प्रक्रिया का परिणाम है। वास्तव में, हेगेल के इतिहास का दर्शन कुछ-कुछ ईसाई धर्म विज्ञान के समान है जो इतिहास को सार्थक घटनाओं के विन्यास के रूप में देखता है और जिसे ब्रह्मंडीय परिकल्पना के रूप में समझा जा सकता है। यह ईश्वर के मार्गदर्शन में या ईश्वर की इच्छानुसार तर्क का प्रकटीकरण है। निरपेक्ष विचार विकासात्मक प्रक्रिया में आगे की ओर प्रगति करता है। इस विकासात्मक प्रक्रिया में निरपेक्ष विचार या भाव बहुत से रूप लेता है। इस प्रक्रिया में वह पूर्ववर्ती रूपों को अलग कर देता है और नए रूपों को ग्रहण कर लेता है। इस विकास का पहला चरण भौतिक या अजैव जगत है। इस आरंभिक अवस्था में निरपेक्ष विचार स्थूल द्रव्य का रूप ग्रहण कर लेता है। इस प्रक्रिया की दूसरी अवस्था जैव जगत है यानी प्राणिजगत, पादप आदि। यह अवस्था इससे पूर्व की अवस्था का सुधरा हुआ या परिष्कृत रूप है। तीसरी अवस्था मानव जाति के विकास की है। प्रत्येक अवस्था अपने से पूर्व की अवस्था से अधिक जटिल है। मानव जाति के विकास

की अवस्था गुणात्मक दृष्टि से पूर्व अवस्था से उच्चतर स्तर की है क्योंकि मनुष्य के पास बुद्धि तत्व है तथा वह अच्छे और बुरे में अंतर कर सकता है। चौथी अवस्था की विशेषता पारिवारिक पद्धति का विकास है। बुद्धितत्व के अतिरिक्त मनुष्य एक-दूसरे के साथ सहयोग और समझौते के साथ रह सकता है। पाँचवी अवस्था की विशेषता नागरिक समाज का विकास है। इस अवस्था में आपसी सहयोग और समझौते के अलावा एक-दूसरे पर आर्थिक निर्भरता इसकी प्रमुख विशेषता है। अंतिम और सर्वोच्च अवस्था में राज्य का विकास दिखाई देता है जो पूर्ण नैतिक व्यवस्था का प्रतिनिधि है। हेगेल का कथन है कि परिवार एकता का प्रतीक है, नागरिक समाज विशिष्टता का प्रतीक है और राज्य (सर्व) व्यापकता का प्रतीक है। पारिवारिक एकता, विशेष रूप से नागरिक समाज की एकता, तब संभव होती है जब सार्वभौम व्यवस्था की वास्तविकता के रूप में राज्य अस्तित्व में आता है। परिवार और नागरिक समाज दोनों कुछ हद तक तर्कपरक हैं लेकिन केवल राज्य ही पूर्ण रूप से तर्कपरक और नैतिक है। संक्षेप में विकास की यह प्रक्रिया निम्नलिखित अवस्थाओं में से गुजरती है और प्रत्येक उत्तरवर्ती अवस्था में अपने से पूर्ववर्ती अवस्थाओं से स्पष्ट रूप में सुधार होता है :

अजैव जगत ⟶ जैव जगत ⟶ मानव जाति ⟶

परिवार ⟶ नागरिक समाज ⟶ राज्य

यहाँ इस बात का ध्यान रखना होगा कि उपर्युक्त युक्ति के द्वारा हेगेल ने द्रव्य और आत्मा (spirit) के बीच संबंध की आधारभूत समस्या के समाधान का प्रयास किया है। उसने यह इस तर्क के आधार पर किया कि द्रव्य आत्मा की ही स्थूल रूप में अभिव्यक्ति है। द्रव्य ने केवल आत्म-तत्व का निषेध है बल्कि वह आत्म-तत्व की सचेतन अनुभूति है।

हेगेल के इतिहास के दर्शन का दूसरा महत्वपूर्ण आयाम इतिहासपरतावाद (historicism) का सिद्धांत है। इस सिद्धांत की व्याख्या करना कठिन है। मोटे तौर पर इतिहासपरतावाद ऐसा सिद्धांत है जिसके अनुसार इतिहास की पूर्ण दिशा पूर्व-निर्धारित होती है। मानवीय हस्तक्षेप या मानवीय प्रयास तभी प्रभावी हो सकता है यदि वह विश्व इतिहास की द्वंद्वात्मक दिशा के अनुकूल हो। एक दार्शनिक ईश्वर की तरह इतिहास भी बुद्धिमान व्यक्ति का तो मार्गदर्शन करता है और मूर्ख व्यक्ति को घसीटता है।

हेगेल के ऐतिहासिक दर्शन का तीसरा महत्वपूर्ण आयाम अरस्तू के सोद्देश्यवाद (teleology) उपयोग है। इसके अनुसार विश्व की प्रत्येक वस्तु अपने उद्देश्य - जो इसकी वास्तविक प्रकृति है - की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। मानवीय पात्रों के दृष्टिकोण से इतिहास विडंबना और त्रासदी का संयोग है; संपूर्णता की दृष्टि से यह चक्रीय है। जब हम हेगेल के इतिहास के दर्शन को समग्रता से देखते हैं तो हम कह सकते हैं कि यह कांट और हर्डर के इतिहास के दर्शनों को संश्लेषित करने का प्रयास है। कांट ने इतिहास की वैज्ञानिक समझ की वकालत की जबकि हर्डर ने अनुभवों के स्थान और चिंतन पर बल दिया। इस दृष्टि से हेगेल के इतिहास का दर्शन चिंतन और अनुमानाश्रित तर्क है। आइए, हम इस विषय पर विस्तार से चर्चा करें।

हेगेल के इतिहास के दर्शन के प्रभाव को और अच्छी प्रकार से समझने के लिए हमें यह समझना होगा कि अनुभवाश्रित इतिहास के विपरीत इसका दार्शनिक इतिहास भी है। बाद की श्रेणी के इतिहासकारों की चिंता का मुख्य विषय तथ्यों का सही रूप में चित्रण है। दूसरी ओर, पूर्व के (दार्शनिक इतिहासकार) केवल तथ्यों के वर्णन से संतुष्ट नहीं हैं और वे इसके अर्थ का दैवीकरण करना चाहते हैं तथा इतिहास के क्षेत्र में कार्यरत तर्क को प्रदर्शित करना चाहते हैं। वे अनुभवाश्रित तथ्यों के केवल पुनःप्रस्तुतीकरण

से संतुष्ट नहीं होते और वे अपने ज्ञान को उसके साथ जोड़ना और तर्क को स्पष्ट रूप में व्यक्त करना चाहते हैं। इस प्रकार वे अनुभवाश्रित विषय-वस्तु को आवश्यक सत्य के स्तर तक उठा देते हैं।

हेगेल की दृष्टि में विश्व का इतिहास आत्मा की ओर से स्वतंत्रता की चेतनता के विकास को प्रदर्शित करता है। हेगेल जब यह कहता है कि पूर्वी विश्व (चीन आदि) में तानाशाही और गुलामी थी और स्वतंत्रता केवल राजाओं तक सीमित थी तब वह वस्तुतः अपने इतिहास के दर्शन का प्रयोग कर रहा होता है। परंतु यूनानी और रोमन सभ्यताओं में भी यद्यपि गुलामी तो थी फिर भी वे स्वतंत्रता का उपभोग करते थे। यूरोप में, विशेष तौर पर जर्मनी में, सभी की स्वतंत्रता पर बल दिया जाता है और प्रत्येक व्यक्ति की असीम योग्यता को स्वीकार किया जाता है। इस प्रकार विश्व के इतिहास की प्रगति की कुछ सुनिश्चित अवस्थाएँ हैं। ये हैं - पूर्वी, यूनानी, रोमन और जर्मन। संक्षेप में, हेगेल के इतिहास के दर्शन के दो भाग हैं : i) सामान्य प्रतिरूप (पैटर्न); और ii) इस सामान्य प्रतिरूप की विभिन्न अवस्थाएँ हैं। हेगेल के इतिहास के दर्शन में ऐतिहासिक परिवर्तन में गतिशील बलों के सिद्धांत की चर्चा है। उसका विचार है कि तर्क की विशाल परिकल्पना को मानवीय आवेशों की सहायता से पूरा किया जा सकता है। कुछ महान व्यक्तियों (जैसे जूलियस सीज़र या सिकंदर) को विधाता के साधनों के रूप में देखा जाता है। इतिहास की इस कथा-वस्तु के निर्वाह के लिए ऐसे व्यक्तियों का होना आवश्यक है। इसे कहने का यह अभिप्राय है कि विचारों का महत्व है लेकिन इसे कार्यान्वित करने के लिए इच्छा-शक्ति का होना भी आवश्यक है।

14.6 राज्य का सिद्धांत

हेगेल का राजनीतिक दर्शन को सबसे प्रारंभिक योगदान उसका राज्य का सिद्धांत है। प्लेटो की तरह हेगेल एक महान व्यवस्था निर्माता था। उसका राज्य का सिद्धांत इस सूक्ति पर आधारित है - "जो तर्कसम्मत है वह वास्तविक है और जो वास्तविक है वह तर्कसंगत होता है।" इसका मतलब है कि इस विश्व में जिस चीज़ का अस्तित्व है वह तर्क के अनुसार है और जो चीज़ तर्क के अनुसार है उसका अस्तित्व है। हीगल का "राज्य का सिद्धांत" द्वंद्वात्मक प्रक्रिया के द्वारा तर्क या आत्मा या निरपेक्ष विचार के धीरे-धीरे उद्घाटित होने की आधारिका (premise) पर आधारित है। तर्क का राज्य में पूर्ण कार्यान्वयन होता है। इस प्रकार, राज्य तर्क का साकार रूप है। राज्य तर्कपरक है और राज्य वास्तविक है। इसलिए जो भी तर्कपरक है वह वास्तविक है। यहाँ वास्तविक का मतलब केवल यह नहीं है कि जो अनुभवाश्रित है बल्कि यह है कि जो आधारभूत है। वास्तव में, हीगल वास्तविक और जिसकी मात्र सत्ता है उनके बीच अंतर करता है। जिसकी मात्र सत्ता है वह केवल क्षणिक है और जो उन आधारभूत ताकतों की सतही अभिव्यक्ति है मात्र वही वास्तविक है। इस प्रकार हेगेल ने तर्कसंगत और वास्तविक के बीच की खाई को पाट दिया। वास्तविक और कुछ न होकर केवल आत्मा की वस्तुपरक अभिव्यक्ति है।

इसका निहितार्थ यह है कि हेगेल की दृष्टि में सभी राज्य तर्कपरक हैं जहाँ तक कि वे तर्क की अभिव्यक्ति की विभिन्न अवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसा करके वह रूढ़िवादी दृष्टिकोण को अपनाता है क्योंकि यह कथन इसके समान है कि जो कुछ भी होता है वह तर्क के प्रकटीकरण की अभिव्यक्ति है। कोई भी घटना तब तक घटित नहीं होती जब तक वह तर्क द्वारा विहित न हो। इसलिए प्रत्येक घटना एक निश्चित तर्कपरक योजना के अनुसार घटित होती है। वह राज्य को "ईश्वर के भूमि पर प्रयाण" (March of God on Earth) के रूप में या तर्क के अंतिम मूर्त रूप की तरह समझता है।

हेगेल के अनुसार राज्य तर्क की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है क्योंकि इसका आविर्भाव परिवार (पक्ष) और नागरिक समाज (प्रतिपक्ष) के संश्लेषण से होता है। परिवार मनुष्य की जैव आवश्यकताओं आहार, यौन और प्यार संबंधी) की पूर्ति करता है। यह आत्मा (spirit) की प्रथम अभिव्यक्ति है परंतु यह इससे उच्चतर या अधिक जटिल आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। इसके लिए हमें नागरिक समाज की आवश्यकता होती है। जहाँ परिवार की बुनियादी विशेषता प्रेम पर आधारित एकता है, वहीं नागरिक समाज की आवश्यकता प्रतियोगी आत्म-हितों को पूरा करने के लिए और मनुष्य की विविध प्रकार की आवश्यकताओं - विशेषतः ऐसी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिन्हें परिवार पूरा नहीं कर सकता - की संतुष्टि के लिए है। नागरिक समाज का संगठन व्यक्ति की भौतिक आवश्यकताओं के आधार पर होता है। ये आवश्यकताएँ पूरी तरह से निजी नहीं होतीं लेकिन मुख्य रूप से आत्म संबंधित होती हैं। नागरिक समाज, परिवार की अपेक्षा कम स्वार्थी होता है। इसे विघटन से बचाया जाता है क्योंकि लोग यह अनुभव करने लगते हैं कि उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति तभी हो सकती है जब वे दूसरे लोगों के दावों को भी स्वीकार कर लें। नागरिक समाज व्यक्ति को शिक्षा देता है कि जहाँ वह यह देखने लगता है कि उसे जिस चीज़ की आवश्यकता हो उसे केवल इच्छा करने से पा सकता है - चाहे दूसरे व्यक्तियों को उसकी आवश्यकता क्यों न हो। यह पूर्ण जैव एकता नहीं है। यह एकता तभी प्राप्त की जा सकती है जब परिवार और नागरिक समाज के बीच विरोध के कारण होने वाले तनाव को राज्य के अंतिम संश्लेषण की ओर बढ़ा दिया जाए। नागरिक समाज, मानव की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है और इसलिए हेगेल की दृष्टि में राज्य अपने आरंभिक रूप में है। राज्य पूरे समुदाय के व्यापक हितों की चिंता करता है और यह जैव स्वरूप ग्रहण कर लेता है।

यहाँ हेगेल के राज्य संबंधी जटिल सिद्धांत को संक्षेप में प्रस्तुत करते हुए कह सकते हैं कि एक तो इसका दैवी उद्‌भव है क्योंकि राज्य एक निरपेक्ष विचार या तर्क के दैवी रूप का विकास है। राज्य से ऊपर किसी प्रकार का आध्यात्मिक विकास संभव नहीं है क्योंकि मनुष्य से आगे किसी प्रकार का भौतिक विकास नहीं हो सकता। यह पृथ्वी पर ईश्वर का प्रयाण है। दूसरे, हेगेल राज्य का पक्षपाती है क्योंकि उसके दर्शन में राज्य किसी लक्ष्य की प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि वह स्वयं लक्ष्य है। राज्य का अस्तित्व व्यक्तियों के लिए नहीं है अपितु व्यक्तियों का अस्तित्व राज्य के लिए है। तीसरे, हेगेल के अनुसार समष्टि (राज्य) उसका निर्माण करने वाले घटकों (व्यक्तियों) से बड़ी होती है। उनकी (व्यक्तियों की) महत्ता केवल इस कारण से है क्योंकि वे राज्य के घटक हैं। इस प्रकार हेगेल ने व्यक्तियों को पूरी तरह से राज्य के अधीन कर दिया। केवल राज्य ही यह जानता है कि क्या बात व्यक्ति के हित में है। इस दृष्टि से राज्य गलत नहीं हो सकता। यह इस कारण से भी गलत नहीं हो सकता क्योंकि यह दैवी है। हेगेल का कथन है कि "मनुष्य का जो भी महत्व है - या जो संपूर्ण आध्यात्मिक यथार्थ है - वह उसे राज्य के माध्यम से प्राप्त हुआ है। इसका आध्यात्मिक महत्व इस बात से निहित है कि उसका अपना सारतत्व - तर्क - वस्तुगत रूप में उसमें विद्यमान है और यही उसके तात्कालिक अस्तित्व का उद्देश्य है। राज्य एक दैवी विचार है, जिस रूप में पृथ्वी पर उसका अस्तित्व है।"

14.7 व्यक्ति की स्वतंत्रता का सिद्धांत

हेगेल के राज्य के सिद्धांत से हम एक और महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। अब चूँकि केवल राज्य यह जानता है कि क्या चीज़ व्यक्ति के हित में है (क्योंकि राज्य सदा सही होता है और राज्य दैवी है)

इसलिए व्यक्तियों को राज्य के बाहर या राज्य के विरुद्ध कोई अधिकार नहीं है। व्यक्तियों को राज्य के बाहर या राज्य के विरुद्ध अधिकार नहीं का कारण यह है कि राज्य स्वयं अधिकारों का स्रोत है। व्यक्ति की स्वतंत्रता राज्य के कानूनों के पूरी तरह से पालन में है। व्यक्ति को वफादार नागरिक होना चाहिए। दूसरे शब्दों में राज्य एक बृहत् संस्था है जिसमें किसी व्यक्ति की बृहत्तर इकाई से भिन्न कोई व्यक्तिगत पसंद नहीं होती। इस प्रकार, हेगेल के दर्शन का एक पक्ष जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण है वह राज्य का उदात्तीकरण और व्यक्ति के अधिकारों और स्वतंत्रताओं का पूर्ण रूप से निषेध है। व्यक्ति की वास्तविक स्वतंत्रता राज्य के अंदर ही प्राप्त की जा सकती है। व्यक्ति के लिए स्वतंत्र होने का एकमात्र रास्ता यह है कि वह स्वेच्छा से राज्य के कानूनों का पालन करे।

यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो व्यक्ति और राज्य के बीच संबंध के प्रश्न पर हेगेल की स्थिति रूसो से बहुत मिलती-जुलती है। आपको स्मरण होगा कि रूसो ने कहा था कि प्रत्येक व्यक्ति की दो इच्छाएँ होती हैं - एक तो वास्तविक इच्छा होती है (जो स्वार्थी होती है) और दूसरी यथार्थ इच्छा होती है (जो तर्कपरक होती है)। रूसो के दर्शन में स्वतंत्रता से अभिप्राय वास्तविक इच्छा का यथार्थ (सामान्य इच्छा) के अधीन होना है। उसी प्रकार हेगेल के दर्शन में व्यक्ति तभी स्वतंत्र है जब वह स्वयं का राज्य के कानूनों के साथ सचेतन रूप में तादात्म्य स्थापित कर ले। हेगेल के अनुसार चूँकि राज्य कभी गलत नहीं हो सकता और साथ ही वह संशय-रहित है इसलिए यदि कभी भी व्यक्ति और राज्य के बीच संघर्ष की स्थिति पैदा होती है तो वहाँ व्यक्ति हमेशा गलत होता है और राज्य हमेशा सही होता है।

इस विषय में (व्यक्ति और राज्य के बीच संबंध के बारे में) हेगेल की स्थिति की हॉब्स की स्थिति से तुलना करना दिलचस्प होगा। हेगेल का मानना है कि व्यक्तियों को राज्य का विरोध करने या राज्य के आदेश की अवज्ञा करने का अधिकार नहीं है। एक सादृश्य पर ध्यान दें - जिस प्रकार शरीर के अंग शरीर के विरुद्ध विद्रोह नहीं कर सकते उसी प्रकार व्यक्ति भी राज्य के विरुद्ध विद्रोह नहीं कर सकते। हेगेल की इस स्थिति को ध्यान में रखकर हम कह सकते हैं हेगेल का राज्य नए चोले में हॉब्स के ''लेवियाथन'' के समान है। वस्तुतः हेगेल की दृष्टि में व्यक्ति की तुलना में राज्य की स्थिति हॉब्स की अपेक्षा अधिक उत्कृष्ट है। कम से कम हॉब्स के अनुसार यदि राज्य, व्यक्ति के अधिकारों को सुरक्षा नहीं देता है तो व्यक्ति को राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने का अधिकार देता है। हॉब्स की सामाजिक संविदा (contract) में व्यक्ति इस आशा से राज्य की अधीनता स्वीकार करते हैं कि राज्य उनके जीवन और संपत्ति को सुरक्षा प्रदान करेगा। यदि राज्य (या राजा) ऐसा करने में समर्थ नहीं होता तो व्यक्ति को राजा की आज्ञा को न मानने का अधिकार है। लेकिन, हेगेल व्यक्ति को ऐसा कोई अधिकार नहीं देता। इसका कारण यह है कि हीगल की दृष्टि में राज्य तर्क का साकार रूप है और व्यक्ति राज्य की उपज हैं। कुछ हद तक हेगेल में राज्य और व्यक्ति के बीच संबंध जैव संबंध हैं जबकि हॉब्स में ये संविदा पर आधारित संबंध हैं।

14.8 उपसहार

निस्संदेह, हेगेल आधुनिक युग का सबसे महान विचारक है। उसे व्यावहारिक विचारक माना जाता है क्योंकि वह वास्तव में विद्यमान प्रशियाई (जर्मन) राज्य को आदर्शपरक और तर्कपरक बनाना चाहता है (यानी जो वास्तविक है वह तर्कपरक है)। प्रोटेस्टेंट-विद्रोह की सुस्पष्ट यूरो केंद्रीय पृष्ठभूमि के कारण उसे पूर्ण विश्वास था कि विशेष रूप से जर्मनी और सामान्यतः यूरोप ऐतिहासिक विकास के अंतिम चरण के निकट पहुँच गया है। उसके अनुसार जर्मनी राज्य निरपेक्ष विचार के अंतिम लक्ष्य और चरम

बिंदु को प्रकट करता है। उसने राज्य को न केवल विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान किया बल्कि उसे नैतिक सामग्रता भी प्रदान की। हेगेल ने कांट के चिरस्थायी शांति के विचार को अस्वीकार कर दिया और विभिन्न प्रकार की शासन पद्धतियों को स्वीकार करते हुए अधिकारों के दो वैकल्पिक दावों के समाधान की प्रक्रिया के रूप में युद्ध को स्वीकार किया। हेगेल के पास न्याय-सम्मत युद्ध का कोई सिद्धांत नहीं था।

हेगेल का सबसे महत्वपूर्ण योगदान "इतिहास का दर्शन" नामक नया क्षेत्र है। उसने ऐसी पद्धति का विकास किया जिसके द्वारा ऐतिहासिक विकास की अनिवार्य प्रगति को विश्वासपूर्वक मापा जा सकता है। इस विषय में उसने न केवल मार्क्स को प्रभावित किया अपितु सेंट साइमन, कॉम्ट और टॉयनबी को भी प्रभावित किया। उसका समग्र बौद्धिक प्रभाव मार्क्सवाद से अस्तित्ववाद तक पड़ा, जिसके कारण उसे परस्पर विरोधी दावे, आलोचनाएँ और प्रशंसाएँ भी प्राप्त हुईं। कार्ल पॉपर ने उसे बीसवीं शताब्दी के फासीवाद के अग्रदूत के रूप में देखा। पॉपर के कथन की प्रतिक्रिया में कॉफमैन ने कहा कि हेगेल अतिवादी व्यक्तिवादी तो था ही नहीं, और निश्चय ही वह सर्वसत्तात्मक (totalitarian) भी नहीं था। एविनेरी और मार्क्यूस भी कॉफमैन के दृष्टिकोण से सहमत थे। फुकुयामा ने मार्क्स और हेगेल के व्यापक प्रभाव के बीच तुलना करते हुए हीगल की विजय की घोषणा की क्योंकि आधुनिक उदारवाद "मान्यता पाने की इच्छा" समाप्त नहीं कर देता बल्कि वह उसे "और अधिक तर्कपरक रूप में" परिवर्तित कर देता है।

हेगेल के साथ क्लासिकी परंपरा का अंत हो गया। मैकिन्टायर ने अनुभव किया कि हीगल के बाद किसी प्रकार के आधारभूत नए परिवर्तन संभव नहीं हुए। यह इस बात से ज्ञात हुआ कि हीगल के बाद राजनीतिक सिद्धांत के परिष्कार का काल समाप्त हुआ। अपने क्षेत्र में अंतिम असाधारण व्यक्तित्व के रूप में हीगल का समकालीन राजनीतिक सिद्धांत पर प्रभाव महत्वपूर्ण घटक के रूप में बना रहा।

14.9 सारांश

हेगेल पर सुकरात (के द्वंद्ववाद), अरस्तू (के सोद्देश्यवाद), रूसो (के वास्तविक इच्छा और यथार्थ "सामान्य" इच्छा) और इमैनुएल कांट (के बुद्धिवाद) का प्रभाव पड़ा था। दूसरे, हमने देखा कि हीगल की पद्धति द्वंद्वात्मक थी। सत्य पर पहुँचने के लिए किसी वस्तु को उसके विरोधी से संबंधित करके समझना चाहिए। इसे पक्ष, प्रतिपक्ष और संश्लेषण की प्रक्रिया कहते हैं। हीगल के राजनीतिक सिद्धांत का तीसरा महत्वपूर्ण पक्ष इतिहास का सिद्धांत है। वह इतिहास को निरपेक्ष विचार या आत्मा (spirit) के क्रमिक विकास के रूप में देखता है। इतिहास प्रगति है लेकिन यह तेज सर्पिल गति से प्रगति करता है। उसके राजनीतिक दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उसका राज्य का सिद्धांत है जो इस सूक्ति पर आधारित है कि "जो तर्कपरक है वह वास्तविक है और जो वास्वतिक है वह तर्कपरक है।" इसका मतलब यह है कि उसकी दृष्टि में जिसका भी अस्तित्व है (या जो भी वास्तविक है) वह तर्कसंगत है क्योंकि यह तर्क के प्रकटीकरण का भाग है। इसी प्रकार, जो भी तर्कपरक है उसका वास्तव में अस्तित्व होना चाहिए। उसने राज्य को सर्वोच्च मंच पर स्थापित किया और यहाँ तक कि उसे "पृथ्वी पर ईश्वर का प्रयाण" कहा। इसका कारण यह है कि "राज्य" तर्क या निरपेक्ष विचार की सर्वोच्च और अंतिम अभिव्यक्ति है। इस विकास की प्रक्रिया में पूर्ववर्ती निम्नलिखित अवस्थाएँ थीं - अजैव जगत → जैव जगत → मानव जाति → परिवार → और नागरिक समाज।

राज्य को इतनी उदात्त अवस्था पर बैठाकर हेगेल ने व्यक्ति की सभी प्रकार की स्वतंत्रता को अस्वीकार कर दिया। उसने राज्य को साधनों के बजाय लक्ष्य माना। क्योंकि राज्य तर्क का साकार रूप है इसलिए वह गलती नहीं कर सकता। व्यक्ति राज्य के साथ पूर्ण रूप से तादात्म्य स्थापित करके ही अपनी स्वतंत्रता का उपभोग कर सकते हैं। इसलिए हेगेल के दर्शन में व्यक्तियों को राज्य के विरुद्ध कोई अधिकार नहीं है। राज्य एक समष्टि (पूर्ण इकाई) है और व्यक्ति उसके घटक हैं जो उस समष्टि का गठन करते हैं और यह समष्टि इसके घटकों के कुल योग से बड़ी है। जिस प्रकार शरीर के विभिन्न अंगों का शरीर के बाहर न तो अस्तित्व संभव है और न ही ये विकसित हो सकते हैं। इसी प्रकार, व्यक्तियों का भी राज्य से बाहर और राज्य से अलग कोई अस्तित्व नहीं है। हीगल के दर्शन में राज्य हॉब्स के ''लेविथाथन'' के समान है। वस्तुतः, हेगेल इस विषय में हॉब्स से आगे है। चूँकि हॉब्स ने व्यक्ति को, अप्रत्यक्ष रूप से, राज्य का विरोध करने का अधिकार दिया है परंतु हीगल व्यक्ति को ऐसा कोई अधिकार नहीं देता।

गत दो शताब्दियों में हीगल के राजनीतिक दर्शन का व्यापक प्रभाव रहा है। इटली में फासीवाद के उद्भव और सोवियत संघ में सर्वसत्तावाद के आविर्भाव का कारण हेगेल के दर्शन को माना जाता है। दक्षिणपंथी विचारधारा की ओर सामान्य प्रवृत्ति इसी दर्शन का परिणाम थी। उसने युद्ध को गौरवान्वित किया क्योंकि उसके विचार में युद्ध से मनुष्य के अपने उच्च गुणों की अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है। वह युद्ध को विश्वात्माओं के हाथ में एक ऐसा साधन मानता है जो द्वंद्वात्मक सिद्धांत के अनुसार विश्व के विकास को सुविधाजनक बनाता है।

14.10 अभ्यास

1. हेगेल के महत्वपूर्ण प्रभाव क्या थे?
2. इस कथन से हीगल का क्या अभिप्राय है कि "वास्तविक तर्कपरक है"।
3. हेगेल का इतिहास का दर्शन क्या है?
4. इस विवरण की व्याख्या कीजिए कि "राज्य पृथ्वी पर ईश्वर का प्रयाण है"
5. व्यक्ति की स्वतंत्रता के बारे में हेगेल के क्या विचार हैं?